साप्ताहिक

बुलंद गोंदिया

खबरों का आईना

प्रधान संपादक : **अभिषेक चौहान** । संपादक : **नवीन अग्रवाल**

E-mail : **bulandgondia@gmail.com** | E-paper : **bulandgondia.net** | Office Contact No.: **7670079009** | R. No.: **MAH-HIN-10169**

वर्ष : 2 | अंक : 14 | गोंदिया : गुरुवार, दि. 11 से 17 नवम्बर 2021 | पृष्ठ : 4 | मूल्य : रु. 5

गोंदिया मेडिकल कॉलेज की इमारत निर्माण में हो रही देरी

केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. भारती पवार ने स्थानीय प्रशासन को लगाई फटकार

गोंदिया – गोंदिया जिले के आगमन पर केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ.भारती पवार द्वारा मेडिकल कॉलेज के निर्माणाधीन इमारत के परिसर का निरीक्षण किए जाने पर प्राप्त हुई जानकारी के आधार पर मेडिकल कॉलेज की इमारत के निर्माण कार्य में स्थानीय प्रशासन की लापरवाही सामने आने पर उन्हें जमकर फटकार लगाने के साथ ही इस संदर्भ में तत्काल सभी खामियों को दूर कर केंद्र सरकार के पास अहवाल भेजने का निर्देश देते हुए सभी कार्रवाई जल्द से जल्द पूरी करने का आदेश दिया। साथ ही जिले के नागरिकों को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने के निर्देश दिए।

गौरतलब है कि गोंदिया में शासकीय मेडिकल कॉलेज की मंजूरी गत ८ वर्षों पूर्व प्राप्त हुई थी। जिसके लिए केंद्र सरकार द्वारा इमारत निर्माण के लिए ९२ करोड रुपए की राशि भी राज्य सरकार को दे दी गई थी। लेकिन स्थानीय प्रशासन, राज्य सरकार व केंद्र सरकार में आपसी तालमेल ना होने के चलते अब तक शासकीय मेडिकल कॉलेज की इमारत का निर्माण कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। गोंदिया जिले के निरिक्षण दौरे पर आए केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. भारती पवार द्वारा मेडिकल कॉलेज की प्रस्तावित भूमि का निरीक्षण किए जाने पर संबंधित अधिकारियों द्वारा समाधानकारक जवाब नहीं दिया गया। गोंदिया मेडिकल कॉलेज की विद्यार्थियों की क्षमता १०० से १५० किए जाने के चलते ५०० बेड के स्थान पर ६५० बेड की इमारत का निर्माण किया जाना है। जिसके संदर्भ में भूमि की कमी का मामला सामने आया। किंतु उपरोक्त इमारत के निर्माण कार्य के लिए लगने वाली भूमि कुडवा परिसर में शासन द्वारा आरक्षित की गई है। लेकिन अब तक वहां पर इमारत का निर्माण कार्य पूर्ण नहीं हो पाया। सार्वजनिक बांधकाम विभाग मेडिकल प्रशासन व स्थानीय प्रशासन द्वारा इस संदर्भ में समाधान कारक जवाब नहीं दिया गया। जिससे स्थानीय प्रशासन राज्य सरकार के आपसी तालमेल के चलते केंद्र सरकार तक इस संदर्भ में संपूर्ण जानकारी नहीं पहुंच पाने के कारण इमारत के निर्माण कार्य में देरी हो रही है।

गोंदिया में जल्द से जल्द मेडिकल कॉलेज की इमारत का निर्माण कार्य को इसके लिए केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ. भारती पवार द्वारा स्थानीय प्रशासन को जमकर फटकार लगाते हुए कड़े निर्देश दिए गए कि इस संदर्भ में जल्द से जल्द जो भी खामियां है, उसे पूर्ण कर शासन तक पहुंचाया जाए तथा इस मामले में केंद्र द्वारा जल्द ही जांच समिति नियुक्त कर मामले की जांच की जाएंगी। इसके पश्चात केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ. भारती पवार द्वारा मेडिकल कॉलेज का निरीक्षण कर वहां की विभिन्न समस्याओं से अवगत हुआ तथा जिला अधिकारी कार्यालय में स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा सभा ली गई। जिसमें जिले के नागरिकों को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा देने का कड़ा निर्देश स्वास्थ्य विभाग को दिया गया।

आयोजित पत्र परिषद में उन्होंने जानकारी दी कि कोरोना वायरस खत्म नहीं हुई है तथा तीसरे चरण की पार्श्वभूमी पर प्रशासन जिम्मेदारी से कार्य करें तथा टीकाकरण पर अधिक से अधिक जोर देकर संपूर्ण नागरिकों का टीकाकरण किया जाए। दवाइयों की आपूर्ति नियमित रखी जाए, जिले के प्रत्येक तहसील में स्क्रीनिंग शिविर का आयोजन करने के साथ ही जिले के सभी शासकीय चिकित्सालय का फायर ऑडिट तत्काल किया जाएगा। केंद्र सरकार द्वारा चलाई गई चलाई जा रही योजना घर-घर दस्तक इस अभियान के अंतर्गत जिले के अधिक से अधिक नागरिकों का टीकाकरण कर टीकाकरण को प्रोत्साहन देने के लिए जनजागृति अभियान चलाया जाए।

इस अवसर पर जिला अधिकारी नयना गुंडे ने जानकारी दी कि कोविड-१९ टीकाकरण में वर्तमान स्थिति में गोंदिया जिला राज्य में पांचवें स्थान पर है तथा मिशन कवच-कुंडल अभियान के अंतर्गत टीकाकरण में ९ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। मिशन युवा स्वास्थ्य अभियान के अंतर्गत २३०५ कॉलेज के विद्यार्थियों को कोरोना वायरस टीका लगाया गया है। घर-घर दस्तक अभियान के अंतर्गत जिले के नागरिकों को टीकाकरण के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। जिले में अब तक ८६ फीसदी टीकाकरण हो चुका है।

आयोजित सभा में सांसद सुनील मेंढे, विधायक विजय रहांगडाले, नगराध्यक्ष अशोक इंगले, पूर्व मंत्री राजकुमार बडोले, पूर्व विधायक संजय पुराम, हेमंत पटले, केशव मानकर, खोमेश्वर राहंगडाले, जिलाधिकारी नयना गुंडे, पुलिस अधीक्षक विश्व पानसरे, अपर जिलाधिकारी राजेश खवले, जिप के अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती पुड, उप जिलाधिकारी स्मिता बेलपत्रे, मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. अपूर्व पावडे, जिला शल्य चिकित्सक डॉ. अमरीश मोहबे, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. नितिन कापसे सहित विभिन्न विभागों के प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे।

नागरिकों को उत्तम स्वास्थ्य सुविधा देने का दिया निर्देश

महिला चिकित्सालय की बदहाली बुलंद गोंदिया ने रखी मंत्री के सामने

गोंदिया के शासकीय महिला चिकित्सालय की बदहाल स्थिति, मरीजों से पैसे की अवैध वसूली, दवाइयों की कमी, कर्मचारियों का अभद्र व्यवहार, दलालो का राज, चिकित्सालय पर वरिष्ठ अधिकारियों का नियंत्रण ना होना तथा आए दिन गर्भवती महिलाओं व नवजात शिशु की मौत का मामला बुलंद गोंदिया द्वारा केंद्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री डॉ. भारती पवार के सामने उठाया गया। इस गंभीर मुद्दे पर मंत्री द्वारा स्वास्थ्य विभाग व जिला प्रशासन को कड़ी फटकार लगाते हुए इस प्रकार की घटनाओं पर तत्काल जांच कर नियंत्रण करने का कड़ा निर्देश दिया।

आर्ट प्वॉईंट के निर्देशक एवं गोंदिया के वरिष्ठ युवा चित्रकार अरुण नशीने ने नगर की सबसे बड़ी ३५ वर्ग फूट की भव्य श्वेत-श्याम (ब्लेक एण्ड वाईट) रंगोली से महादेव की मनमोहक, अदभुत, काल्पनिक कलाकृति उकेर कर नगरवासियों को मंत्र मुग्ध कर खूब सराहना एवम आशीर्वाद बटोरा।

पुलिस सिपाही का बेटा डेविड बना आयएफएस

पहले ही प्रयास में यूपीएससी परीक्षा की उत्तीर्ण

गोंदिया – केंद्रीय लोकसेवा आयोग परीक्षा यूपीएससी का अंतिम परिणाम २९ अक्टूबर को घोषित किया गया है। जिसमें ऑल इंडिया आयएफएस की रैंक में ८३वां क्रमांक प्राप्त कर पहले ही प्रयास में यूपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर सेवानिवृत्त पुलिस सिपाही के बेटे डेविड व्यंकटराव चनाप (२४) ने सफलता प्राप्त की है।

गोंदिया जिले के नक्सलग्रस्त आदिवासी बहुल तहसील के हरदोली निवासी डेविड व्यंकटराव चनाप यह सामान्य परिवार से होकर सेवानिवृत्त पुलिस सिपाही का बेटा है। डेविड बचपन से ही होशियार तथा कुछ करने की तमन्ना थी। डेविड ने प्राथमिक शिक्षा सरकारी स्कूल दांडेगाव में प्राप्त की। उसके बाद उसके पिता का स्थानांतरण आमगाव होने के कारण डेविड को भी अपने पिता के साथ आमगाव जाना पडा। वहां पर एक निजी संस्था के कॉलेज में कक्षा बारावी तक पढाई पूरी की। शिक्षा में डेविड होशियार होने के कारण कक्षा दसवी में ९५ व कक्षा बारावी में ९२ प्रतिशत अंक प्राप्त कर मेरिट सूचि में अपना नाम दर्ज किया। उसके बाद सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज पूना में उसने आगे की शिक्षा मॅकेनिकल में बी. टेक. किया। इस दौरान डेविड के सहयोगियों ने यूपीएससी की तैयारी करने सलाह दी। बगैर कोचिंग वह सहयोगियों की मदत से वर्ष २०१९-२० में आयोजित आयएफएस की यूपीएससी परीक्षा दी। जिसका परिणाम २९ अक्टुबर को घोषित किया गया। जिसमें ऑल इंडिया रैंक में ८३ वा क्रमांक डेविड ने प्राप्त किया है। विशेष यह है कि, डेविड की उम्र मात्र २४ वर्ष होकर किसी भी प्रकार की कोचिंग नही लगाई, और ना ही घर से आर्थीक मदत ली। डेविड ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता, भाई एवं अपने सहयोगियों को दिया है।

आदिवासी समाज में पहले आयएफएस

इस संदर्भ में अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद के अजय कोठेवार ने जानकारी देते हुये बताया कि, डेविड चनाप ऐसे आदिवासी समाज के पहले विद्यार्थी है, जिसने आयएफएस की यूपीएससी परीक्षा पहले ही प्रयास में उत्तीर्ण होकर आयएफएस श्रेणी के अधिकारियों की सूचि में अपना नाम दर्ज किया है। डेविड की सफलता गोंदिया जिलावासियों एवं आदिवासी विद्यार्थीयों के लिए प्रेरणा बन रही है। जल्द ही समाज की ओर से डेविट का सत्कार किया जाएगा।

आयएएस बनने की इच्छा

यूपीएससी की आयएफएस परीक्षा में सफल होने में सफलता मिली है। लेकिन मैं आयएएस अधिकारी बनना चाहता हूं। इसके लिए तैयारियां शुरु कर दी है। आयएएस की परीक्षा जनवरी २०२२ में होने जा रही है। इस परीक्षा में भी मुझे अच्छे अंक प्राप्त होंगे। इस उम्मीद से आगे की पढाई शुरु कर दी है। मन में लगन और दृढ इच्छा हो तो कठिन राह को भी आसान किया जा सकता है।

– डेविड व्यंकटराव चनाप
गोंदिया

सर्व जनतेला दिवाळी व नववर्षाच्या हार्दिक शुभेच्छा...

उपजिल्हा रुग्णालय, तिरोडा

- गरोदर मातांना जोखमीच्या शिजरन शस्त्रक्रियेची मोफत सुविधा.
- गरोदर स्त्रियांकरीता मोफत सोनोग्राफीची व्यवस्था.
- मोफत कुटुंबकल्याण शस्त्रक्रिया.
- सर्व प्रकारच्या रक्त चाचण्या डिसीएचसी (डेडीकेटेड कोविड हेल्थकेअर) 20 बेडचे मोफत उपलब्ध.
- मोफत कोविड चाचण्या (RTPCR & RAT) तज्ञ डॉक्टरांची उपलब्धता.
- सुसज्ज ऑपरेशन थिएटर.
- यावर्षीचा कायाकल्पमध्ये राज्यस्तरीय द्वितीय पुरस्कार प्राप्त रुग्णालय.
- राष्ट्रीय पातडीवरील लक्ष्य व NQAS सर्टीफाईड रुग्णालय.
- 24 तास मोफत ॲम्बुलन्स सेवा उपलब्ध.
- स्वच्छ व सुंदर रुग्णालय. ● आयुष विभाग कार्यरत.
- टेलीमेडीसीनच्या सेवा रुग्णांना उपलब्ध.
- मोतियाबिंदू शस्त्रक्रियेमध्ये जिल्ह्यात अव्वल.
- मोफत हायड्रोसिल शस्त्रक्रियाची सुविधा.
- मोफत जननीशिशु सुरक्षा कार्यक्रम. ● मोफत लसीकरण कार्यक्रम.
- 102 व 108 ॲम्बुलन्सची मोफत सुविधा.
- दरवर्षी आनंदीबाई जोशी पुरस्कार प्राप्त रुग्णालय.
- सुरक्षित नॉर्मल प्रसुतीची संख्या सर्वात जास्त.

डॉ.हिम्मत मेश्राम
वैद्यकिय अधिक्षक

आणि सर्व डॉक्टर्स, नर्स व कर्मचारीबंधु, उपजिल्हा रुग्णालय, तिरोडा

यम द्वितीया / भाई दूज

भ्रातृ द्वितीया (भाई दूज) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाने वाला हिन्दू धर्म का पर्व है जिसे **यम द्वितीया** भी कहते हैं। यह दीपावली के दो दिन बाद आने वाला ऐसा पर्व है, जो भाई के प्रति बहन के स्नेह को अभिव्यक्त करता है एवं बहनें अपने भाई की खुशहाली के लिए कामना करती हैं।

पौराणिक मान्यता

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को पूर्व काल में यमुना ने यमराज को अपने घर पर सत्कारपूर्वक भोजन कराया था। उस दिन नारकी जीवों को यातना से छुटकारा मिला और उन्हें तृप्त किया गया। वे पाप-मुक्त होकर सब बंधनों से छुटकारा पा गये और सब के सब यहां अपनी इच्छा के अनुसार सन्तोषपूर्वक रहे। उन सब ने मिलकर एक महान् उत्सव मनाया जो यमलोक के राज्य को सुख पहुंचाने वाला था। इसीलिए यह तिथि तीनों लोकों में यम द्वितीया के नाम से विख्यात हुई।

जिस तिथि को यमुना ने यम को अपने घर भोजन कराया था, उस तिथि के दिन जो मनुष्य अपनी बहन के हाथ का उत्तम भोजन करता है उसे उत्तम भोजन समेत धन की प्राप्ति भी होती रहती है।

विधि एवं निर्देश

समझदार लोगों को इस तिथि को अपने घर मुख्य भोजन नहीं करना चाहिए। उन्हें अपनी बहन के घर जाकर उन्हीं के हाथ से बने हुए पुष्टिवर्धक भोजन को स्नेह पूर्वक ग्रहण करना चाहिए तथा जितनी बहनें हों उन सबको पूजा और सत्कार के साथ विधिपूर्वक वस्त्र, आभूषण आदि देना चाहिए। बहन के हाथ का भोजन उत्तम माना गया है। सगी बहन के अभाव में अन्य बहनें के हाथ का भोजन करना चाहिए जैसे अपने चाचा, मामा, मौसी की पुत्री को या अच्छे मित्र की बहन को भी बहन मानकर ऐसा करना चाहिए। बहन को चाहिए कि वह भाई को शुभ आसन पर बिठाकर उसके हाथ-पैर धुलाये, स्वयं स्पर्श नहीं करे। गंधादि से उसका सम्मान करे और दाल-भात, फुलके, कढ़ी, सीरा, पूरी, चूरमा अथवा लड्डू, जलेबी, घेवर, पायसम (दूध की खीर) या जो भी उपलब्ध हो यथा सामर्थ्य उत्तम पदार्थों का भोजन कराये। भाई बहन को अन्न, वस्त्र आदि देकर उसके चरण स्पर्श कर शुभाशीष प्राप्त करे।

लोक प्रचलित विधि

एक उच्चासन (मोढ़ा, पीढ़ी) पर चावल के घोल से पांच शंक्वाकार आकृति बनाई जाती है। उसके बीच में सिंदूर लगा दिया जाता है। आगे में स्वच्छ जल, ६ कुम्हरे का फूल, सिंदूर, ६ पान के पत्ते, ६ सुपारी, बड़ी इलायची, छोटी इलाइची, हर्रे, जायफल इत्यादि रहते हैं। कुम्हरे का फूल नहीं होने पर गेंदा का फूल भी रह सकता है। बहन भाई के पैर धुलाती है। इसके बाद उच्चासन (मोढ़े, पीढ़ी) पर बैठाती है और अंजलि-बद्ध होकर भाई के दोनों हाथों में चावल का घोल एवं सिंदूर लगा देती है। हाथ में मधु, गाय का घी, चंदन लगा देती है। इसके बाद भाई की अंजलि में पान का पत्ता, सुपारी, कुम्हरे का फूल, जायफल इत्यादि देकर कहती है - **यमुना ने निमंत्रण दिया यम को, मैं निमंत्रण दे रही हूं अपने भाई कोय जितनी बड़ी यमुना जी की धारा, उतनी बड़ी मेरे भाई की आयु।** यह कहकर अंजलि में जल डाल देती है। इस तरह तीन बार करती है, तब जल से हाथ-पैर धो देती है और कपड़े से पोंछ देती है। टीका लगा देती है। इसके बाद भुना हुआ मखान खिलाती है। भाई बहन को अपनी सामर्थ्य के अनुसार उपहार देता है। इसके बाद उत्तम पदार्थो का भोजन कराया जाता है।

स्पष्ट है कि इस व्रत में बहन को अन्न-वस्त्र, आभूषण आदि इच्छानुसार भेंट देना तथा बहन के द्वारा भाई को उत्तम भोजन कराना ही मुख्य क्रिया है। यह मुख्यत: भाई-बहन के पवित्र स्नेह को अधिकाधिक सुदृढ़ रखने के उद्देश्य से परिचालित व्रत है।

भारत रत्न महामहोपाध्याय डॉ. पी. वी. काणे के अनुसार भ्रातृ द्वितीया का उत्सव एक स्वतंत्र कृत्य है, किंतु यह दिवाली के तीन दिनों में संभवत: इसीलिए मिला लिया गया कि इसमें बड़ी प्रसन्नता एवं आल्लाद का अवसर मिलता है जो दीवाली की घड़ियों को बढ़ा देता है।

चित्रगुप्त जयन्ती

इसके अलावा कायस्थ समाज में इसी दिन अपने आराध्य देव चित्रगुप्त की पूजा की जाती है। कायस्थ लोग स्वर्ग में श्री धर्मराज का लेखा-जोखा रखने वाले श्री चित्रगुप्त जी का पूजन सामूहिक रुप से तस्वीरों अथवा मूर्तियों के माध्यम से करते हैं। वे इस दिन कारोबारी बहीखातों की पूजा भी करते हैं।

गोवर्धन पूजा

दीपावली के अगले दिन **गोवर्धन पूजा** की जाती है। लोग इसे **अन्नकूट** के नाम से भी जानते हैं। इस त्यौहार का भारतीय लोकजीवन में काफी महत्व है। इस पर्व में प्रकृति के साथ मानव का सीधा सम्बन्ध दिखाई देता है। इस पर्व की अपनी मान्यता और लोककथा है। गोवर्धन पूजा में गोधन यानी गायों की पूजा की जाती है। शास्त्रों में बताया गया है कि गाय उसी प्रकार पवित्र होती है जैसे नदियों में गंगा। गाय को देवी लक्ष्मी का स्वरुप भी कहा गया है। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार सुख समृद्धि प्रदान करती हैं उसी प्रकार गौ माता भी अपने दूध से स्वास्थ्य रुपी धन प्रदान करती हैं। इनका बछड़ा खेतों में अनाज उगाता है। इस तरह गौ सम्पूर्ण मानव जाती के लिए पूजनीय और आदरणीय है। गौ के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन गोर्वधन की पूजा की जाती है और इसके प्रतीक के रुप में गाय की।

जब कृष्ण ने ब्रजवासियों को मूसलधार वर्षा से बचने के लिए सात दिन तक गोवर्धन पर्वत को अपनी सबसे छोटी उँगली पर उठाकर रखा और गोप-गोपिकाएँ उसकी छाया में सुखपूर्वक रहे। सातवें दिन भगवान ने गोवर्धन को नीचे रखा और हर वर्ष गोवर्धन पूजा करके अन्नकूट उत्सव मनाने की आज्ञा दी। तभी से यह उत्सव अन्नकूट के नाम से मनाया जाने लगा।

कबीर साहेब जी अपनी वाणी में कहते है :

कबीर, गोवर्धन कृष्ण जी उठाया,
द्रोणागिरि हनुमंत।
शेष नाग सब सृष्टी उठाई, इनमें को भगवंत।।

गोवर्धन पूजा के सम्बन्ध में एक लोकगाथा प्रचलित है। कथा यह है कि देवराज इन्द्र को अभिमान हो गया था। इन्द्र का अभिमान चूर करने हेतु भगवान श्री कृष्ण जो स्वयं लीलाधारी श्री हरि विष्णु के अवतार हैं ने एक लीला रची। प्रभु की इस लीला में यूं हुआ कि एक दिन उन्होंने देखा के सभी बृजवासी उत्तम पकवान बना रहे हैं और किसी पूजा की तैयारी में जुटे। श्री कृष्ण ने बड़े भोलेपन से मईया यशोदा से प्रश्न किया **मईया ये आप लोग किनकी पूजा की तैयारी कर रहे हैं।** कृष्ण की बातें सुनकर मैया बोली लल्ला हम देवराज इन्द्र की पूजा के लिए अन्नकूट की तैयारी कर रहे हैं। मैया के ऐसा कहने पर श्री कृष्ण बोले मैया हम इन्द्र की पूजा क्यों करते हैं? मैईया ने कहा वह वर्षा करते हैं जिससे अन्न की पैदावार होती है उनसे हमारी गायों को चारा मिलता है। भगवान श्री कृष्ण बोले हमें तो गोर्वधन पर्वत की पूजा करनी चाहिए क्योंकि हमारी गाये वहीं चरती हैं, इस दृष्टि से गोर्वधन पर्वत ही पूजनीय है और इन्द्र तो कभी दर्शन भी नहीं देते व पूजा न करने पर क्रोधित भी होते हैं अतरु ऐसे अहंकारी की पूजा नहीं करनी चाहिए।

लीलाधारी की लीला और माया से सभी ने इन्द्र के बदले गोवर्धन पर्वत की पूजा की। देवराज इन्द्र ने इसे अपना अपमान समझा और मूसलाधार वर्षा शुरु कर दी। प्रलय के समान वर्षा देखकर सभी बृजवासी भगवान कृष्ण को कोसने लगे कि, सब इनका कहा मानने से हुआ है। तब मुरलीधर ने मुरली कमर में डाली और अपनी कनिष्ठा उंगली पर पूरा गोवर्धन पर्वत उठा लिया और सभी बृजवासियों को उसमें अपने गाय और बछड़े समेत शरण लेने के लिए बुलाया। इन्द्र कृष्ण की यह लीला देखकर और क्रोधित हुए फलतरु वर्षा और

तेज हो गयी। इन्द्र का मान मर्दन के लिए तब श्री कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से कहा कि आप पर्वत के ऊपर रहकर वर्षा की गति को नियत्रित करें और शेषनाग से कहा आप मेड़ बनाकर पानी को पर्वत की ओर आने से रोकें।

इन्द्र लगातार सात दिन तक मूसलाधार वर्षा करते रहे तब उन्हे एहसास हुआ कि उनका मुकाबला करने वाला कोई आम मनुष्य नहीं हो सकता अतरु वे ब्रम्हा जी के पास पहुंचे और सब वृतान्त कह सुनाया। ब्रम्हा जी ने इन्द्र से कहा कि आप जिस कृष्ण की बात कर रहे हैं वह भगवान विष्णु के साक्षात अंश हैं और पूर्ण पुरुषोत्तम नारायण हैं। ब्रम्हा जी के मुंख से यह सुनकर इन्द्र अत्यंत लज्जित हुए और श्री कृष्ण से कहा कि प्रभु मैं आपको पहचान न सका इसलिए अहंकारवश भूल कर बैठा। आप दयालु हैं और कृपालु भी इसलिए मेरी भूल क्षमा करें। इसके पश्चात देवराज इन्द्र ने मुरलीधर की पूजा कर उन्हें भोग लगाया।

इस पौराणिक घटना के बाद से ही गोवर्धन पूजा की जाने लगी। बृजवासी इस दिन गोवर्धन पर्वत की पूजा करते हैं। गाय बैल को इस दिन स्नान कराकर उन्हें रंग लगाया जाता है व उनके गले में नई रस्सी डाली जाती है। गाय और बैलों को गुड़ और चावल मिलाकर खिलाया जाता है।

गोवर्धन पूजा की विधि

इस दिन प्रात: काल शरीर पर तेल की मालिश करने के बाद में स्नान करने का प्राचीन परंपरा है. इस दिन आप सुबह जल्दी उठकर पूजन सामग्री के साथ में आप पूजा स्थल पर बैठ जाइए और अपने कुल देव का, कुल देवी का ध्यान करिए पूजा के लिए गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत पूरी श्रद्धा भाव से तैयार कीजिए। इसे लेटे हुये पुरुष की आकृति में बनाया जाता है। यदि आप से ठीक तरीके से नहीं बने तो आप चाहे जैसा बना लीजिए. प्रतीक रुप से गोवर्धन रुप में आप इसे तैयार कर लीजिए फूल, पत्ती, टहनीयो एवं गाय की आकृतियों से या फिर आप अपनी सुविधा के अनुसार इसे किसी भी आकृति से सजा लीजिए।

गोवर्धन की आकृति तैयार कर उनके मध्य में भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति रखी जाती है नाभि के स्थान पर एक कटोरी जितना गड्ढा बना लिया जाता है और वहां एक कटोरि या मिट्टी का दीपक रखा जाता है फिर इसमें दूध, दही, गंगाजल, शहद और बतासे इत्यादि डालकर पूजा की जाती है और बाद में इसे प्रसाद के रुप में बांटा जाता है। गोवर्धन पूजा के दौरान एक मंत्र का जाप करना चाहिए।

कुछ स्थानों पर गोवर्धन पूजा के साथ ही गायों को स्नान कराने की उन्हें सिंदूर इत्यादि पुष्प मालाओं से सजाए जाने की परंपरा भी है इस दिन गाय का पूजन भी किया जाता है तो यदि आप गाय को स्नान करा कर उसे सजा सकते हैं या उसका श्रृंगार कर सकते हैं तो कोशिश करिए कि गाय का श्रृंगार करें और उसके सिंह पर घी लगाए गुड खिलाएं। गाय की पूजा के बाद में एक मंत्र का उच्चारण किया जाता है जिससे लक्ष्मी जी प्रसन्न होती हैं और आपके घर में कभी धन की कमी नहीं रहती है।

फल मिठाई इत्यादि आप पूजा के दौरान गोवर्धन में अर्पित करिए गन्ना चढ़ाई है और एक कटोरी दही नाभि स्थान में डाल कर झरनी में से छिड़कते हैं। गोवर्धन जो बनाया जाता है गोबर का उसमें दहि डालकर उसको झरनी से छानीये और फिर गोवर्धन के गीत गाते हुए गोवर्धन की सात बार परिक्रमा की जाती है परिक्रमा के समय एक व्यक्ति हाथ में जल का लोटा व दुसारा व्यक्ति अन्न यानि कि जौ लेकर चलते हैं और जल वाला व्यक्ति जल की धारा को धरती पर गिराते हुआ चलता है और दुसरा अन्न यानि कि जौ बोते हुए परिक्रमा पूरी करते हैं।

छठ पूजा

छठ पर्व, छठ या षष्ठी पूजा कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी को मनाया जाने वाला एक हिन्दू पर्व है। सूर्योपासना का यह अनुपम लोकपर्व मुख्य रुप से बिहार, झारखण्ड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में मनाया जाता है। कहा जाता है यह पर्व बिहारीयों का सबसे बड़ा पर्व है ये उनकी संस्कृति है। छठ पर्व बिहार मे बड़े धुम धाम से मनाया जाता है। ये एक मात्र ही बिहार या पूरे भारत का ऐसा पर्व है जो वैदिक काल से चला आ रहा है और ये बिहार कि संस्कृति बन चुका हैं। यहा पर्व बिहार कि वैदिक आर्य संस्कृति कि एक छोटी सी झलक दिखाता हैं। ये पर्व मुख्य रुप से कृषियो द्वारा लिखी गई ऋग्वेद मे सूर्य पूजन, उषा पूजन और आर्य परंपरा के अनुसार बिहार मे यहा पर्व मनाया जाता हैं।

बिहार मे हिन्दुओं द्वारा मनाये जाने वाले इस पर्व को इस्लाम सहित अन्य धर्मावलम्बी भी मनाते देखे जाते हैं। धीरे-धीरे यह त्योहार प्रवासी भारतीयों के साथ-साथ विश्वभर में प्रचलित हो गया है। छठ पूजा सूर्य, उषा, प्रकृति, जल, वायु और उनकी बहन छठी मईया को समर्पित है ताकि उन्हें पृथ्वी पर जीवन की देवतायों को बहाल करने के लिए धन्यवाद और कुछ शुभकामनाएं देने का अनुरोध किया जाए। छठ में कोई मूर्तिपूजा शामिल नहीं है।

त्यौहार के अनुष्ठान कठोर हैं और चार दिनों की अवधि में मनाए जाते हैं। इनमें पवित्र स्नान, उपवास और पीने के पानी (वृत्ता) से दूर रहना, लंबे समय तक पानी में खड़ा होना, और प्रसाद (प्रार्थना प्रसाद) और अर्घ्य देना शामिल है। परवातिन नामक मुख्य उपासक (संस्कृत पार्व से, जिसका मतलब **अवसर** या **त्यौहार**) आमतौर पर महिलाएं होती हैं। हालांकि, बड़ी संख्या में पुरुष इस उत्सव का भी पालन करते हैं क्योंकि छठ लिंग-विशिष्ट त्यौहार नहीं है। छठ महापर्व के व्रत को स्त्री - पुरुष - बुढ़े - जवान सभी लोग करते हैं। कुछ भक्त नदी के किनारों के लिए सिर के रुप में एक प्रोस्टेशन मार्च भी करते हैं।

पर्यावरणविदों का दावा है कि छठ सबसे पर्यावरण-अनुकूल हिंदू त्यौहार है। यह त्यौहार नेपाली और भारतीय लोगों द्वारा अपने डायस्पोरा के साथ मनाया जाता है।

शुरुआत

एक कथा के अनुसार प्रथम देवासुर संग्राम में जब असुरों के हाथों देवता हार गये थे, तब देव माता अदिति ने तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति के लिए देवारण्य के देव सूर्य मंदिर में छठी मैया की आराधना की थी। तब प्रसन्न होकर छठी मैया ने उन्हें सर्वगुण संपन्न तेजस्वी पुत्र होने का वरदान दिया था। इसके बाद अदिति के पुत्र हुए त्रिदेव रुप आदित्य भगवान, जिन्होंने असुरों पर देवताओं को विजय दिलायी। कहा जाता हैं कि उसी समय से देव सेना षष्ठी देवी के नाम पर इस धाम का नाम देव हो गया और छठ का चलन भी शुरु हो गया।

नामकरण

छठ, षष्ठी का अपभ्रंश है। कार्तिक मास की अमावस्या को दीवाली मनाने के बाद मनाये जाने वाले इस चार दिवसीय व्रत की सबसे कठिन और महत्वपूर्ण रात्रि कार्तिक शुक्ल षष्ठी की होती है। कार्तिक शुक्ल पक्ष के षष्ठी को यह व्रत मनाये जाने के कारण इसका नामकरण छठ व्रत पड़ा।

छठ पूजा साल में दो बार होती है एक चौत मास में और दुसरा कार्तिक मास शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथि, पंचमी तिथि, षष्ठी तिथि और सप्तमी तिथि तक मनाया जाता है. षष्ठी देवी माता को कात्यायनी माता के नाम से भी जाना जाता है। नवरात्रि के दिन में हम षष्ठी माता की पूजा करते हैं षष्ठी माता कि पुजा घर परिवार के सदस्यों के सभी सदस्यों के सुरक्षा एवं स्वास्थ्य लाभ के लिए करते हैं षष्ठी माता की पूजा, सुरज भगवान और मां गंगा की पूजा देश में एक लोकप्रिय पूजा है। यह प्राकृतिक सौंदर्य और परिवार के कल्याण के लिए की जाने वाली एक महत्वपूर्ण पूजा है। इस पुजा में गंगा स्थान या नदी तालाब जैसे जगह होना अनिवार्य हैं यही कारण है कि छठ पूजा के लिए सभी नदी तालाब कि साफ सफाई किया जाता है और नदी तालाब को सजाया जाता है प्राकृतिक सौंदर्य में गंगा मैया या नदी तालाब मुख्य स्थान है

लोक आस्था का पर्व

भारत में छठ सूर्योपासना के लिए प्रसिद्ध पर्व है। मूलत: सूर्य षष्ठी व्रत होने के कारण इसे छठ कहा गया है। यह पर्व वर्ष में दो बार मनाया जाता है। पहली बार चौत्र में और दूसरी बार कार्तिक में। चौत्र शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले छठ पर्व को चौती छठ व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी पर मनाये जाने वाले पर्व को कार्तिकी छठ कहा जाता है। पारिवारिक सुख-समृद्धी तथा मनोवांछित फल प्राप्ति के लिए यह पर्व मनाया जाता है। स्त्री और पुरुष समान रुप से इस पर्व को मनाते हैं। छठ व्रत के सम्बन्ध में अनेक कथाएँ प्रचलित हैंय उनमें से एक कथा के अनुसार जब पांडव अपना सारा राजपाट जुए में हार गये, तब श्री कृष्ण द्वारा बताये जाने पर द्रौपदी ने छठ व्रत रखा। तब उनकी मनोकामनाएँ पूरी हुईं तथा पांडवों को उनका राजपाट वापस मिला। लोक परम्परा के अनुसार सूर्यदेव और छठी मइया का सम्बन्ध भाई-बहन का है। लोक मातृका षष्ठी की पहली पूजा सूर्य ने ही की थी।

छठ पर्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो षष्ठी तिथि (छठ) को एक विशेष खगोलीय परिवर्तन होता है, इस समय सूर्य की पराबैगनी किरणें (Ultra Violet Rays) पृथ्वी की सतह पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती हैं इस कारण इसके सम्भावित कुप्रभावों से मानव की यथासम्भव रक्षा करने का सामथ्य प्राप्त होता है। पर्व पालन से सूर्य (तारा) प्रकाश (पराबैगनी किरण) के हानिकारक प्रभाव से जीवों की रक्षा सम्भव है। पृथ्वी के जीवों को इससे बहुत लाभ मिलता है।

सूर्य के प्रकाश के साथ उसकी पराबैगनी किरण भी चंद्रमा और पृथ्वी पर आती हैं। सूर्य का प्रकाश जब पृथ्वी पर पहुँचता है, तो पहले वायुमंडल मिलता है। वायुमंडल में प्रवेश करने पर उसे आयन मंडल मिलता है। पराबैगनी किरणों का उपयोग कर वायुमंडल अपने ऑक्सीजन तत्व को संश्लेषित कर उसे उसके एलोट्रोप ओजोन में बदल देता है। इस क्रिया द्वारा सूर्य की पराबैगनी किरणों का अधिकांश भाग पृथ्वी के वायुमंडल में ही अवशोषित हो जाता है। पृथ्वी की सतह पर केवल उसका नगण्य भाग ही पहुँच पाता है। सामान्य अवस्था में पृथ्वी की सतह पर पहुँचने वाली पराबैगनी किरण की मात्रा मनुष्यों या जीवों के सहन करने की सीमा में होती है। अतरु सामान्य अवस्था में मनुष्यों पर उसका कोई विशेष हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि उस धूप द्वारा हानिकारक कीटाणु मर जाते हैं, जिससे मनुष्य या जीवन को लाभ होता है।

छठ जैसी खगोलीय स्थिति (चंद्रमा और पृथ्वी के भ्रमण तलों की सम रेखा के दोनों छोरों पर) सूर्य की पराबैगनी किरणें कुछ चंद्र सतह से परावर्तित तथा कुछ गोलीय अपवर्तित होती हुई, पृथ्वी पर पुन: सामान्य से अधिक मात्रा में पहुँच जाती हैं। वायुमंडल के स्तरों से आवर्तित होती हुई, सूर्यास्त तथा सूर्योदय को यह और भी सघन हो जाती है। ज्योतिषीय गणना के अनुसार यह घटना कार्तिक तथा चौत्र मास की अमावस्या के छरु दिन उपरान्त आती है। ज्योतिषीय गणना पर आधारित होने के कारण इसका नाम और कुछ नहीं, बल्कि छठ पर्व ही रखा गया है।

छठ पर्व किस प्रकार मनाते हैं ?

यह पर्व चार दिनों का है। भैयादूज के तीसरे दिन से यह आरम्भ होता है। पहले दिन सेन्धा नमक, घी से बना हुआ अरवा चावल और कद्दू की सब्जी प्रसाद के रुप में ली जाती है। अगले दिन से उपवास आरम्भ होता है। व्रति दिनभर अन्न-जल त्याग कर शाम करीब ७ बजे से खीर बनाकर, पूजा करने के उपरान्त प्रसाद ग्रहण करते हैं, जिसे खरना कहते हैं। तीसरे दिन डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य यानी दूध अर्पण करते हैं। अंतिम दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य चढ़ाते हैं। पूजा में पवित्रता का विशेष ध्यान रखा जाता हैय लहसून, प्याज वर्जित होता है। जिन घरों में यह पूजा होती है, वहाँ भक्तिगीत गाये जाते हैं।अंत में लोगो को पूजा का प्रसाद दिया जाता हैं।

उत्सव का स्वरुप

छठ पूजा चार दिवसीय उत्सव है। इसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को तथा समाप्ति कार्तिक शुक्ल सप्तमी को होती है। इस दौरान व्रतधारी लगातार ३६ घंटे का व्रत रखते हैं। इस दौरान वे पानी भी ग्रहण नहीं करते।

नहाय खाय

छठ पर्व का पहला दिन जिसे **नहाय-खाय** के नाम से जाना जाता है, उसकी शुरुआत चौत्र या कार्तिक महीने के चतुर्थी कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होता है। सबसे पहले घर की सफाई कर उसे पवित्र किया जाता है। उसके बाद व्रती अपने नजदीक में स्थित गंगा नदी, गंगा की सहायक नदी या तालाब में जाकर स्नान करते है। व्रती इस दिन नाखनू वगैरह को अच्छी तरह काटकर, स्वच्छ जल से अच्छी तरह बालों को धोते हुए स्नान करते हैं। लौटते समय वो अपने साथ गंगाजल लेकर आते है जिसका उपयोग वे खाना बनाने में करते है। वे अपने घर के आस पास को साफ सुथरा रखते है। व्रती इस दिन सिर्फ एक बार ही खाना खाते है। खाना में व्रती कद्दू की सब्जी, मुंग चना दाल, चावल का उपयोग करते है। तली हुई पूरियाँ पराठे सब्जियाँ आदि वर्जित हैं। यह खाना कांसे या मिटटी के बर्तन में पकाया जाता है। खाना पकाने के लिए आम की लकड़ी और मिटटी के चूल्हे का इस्तेमाल किया जाता है। जब खाना बन जाता है तो सर्वप्रथम व्रती खाना खाते है उसके बाद ही परिवार के अन्य सदस्य खाना खाते है।

खरना और लोहंडा

छठ पर्व का दूसरा दिन जिसे खरना या लोहंडा के नाम से जाना जाता है, चौत्र या कार्तिक महीने के पंचमी को मनाया जाता है। इस दिन व्रती पुरे दिन उपवास रखते है। इस दिन व्रती अन्न तो दूर की बात है सूर्यास्त से पहले पानी की एक बूंद तक ग्रहण नहीं करते है। शाम को चावल गुड़ और गन्ने के रस का प्रयोग कर खीर बनाया जाता है। खाना बनाने में नमक और चीनी का प्रयोग नहीं किया जाता है। इन्हीं दो चीजों को पुनरु सूर्यदेव को नैवैद्य देकर उसी घर में **एकान्त** करते हैं अर्थात् एकान्त रहकर उसे ग्रहण करते हैं। परिवार के सभी सदस्य उस समय घर से बाहर चले जाते हैं ताकी कोई शोर न हो सके। एकान्त से खाते समय व्रती हेतु किसी तरह की आवाज सुनना पर्व के नियमों के विरुद्ध है।

शेष अगले अंक में...

संपादकिय

ब्लैक स्पॉट हों ठीक

केंद्र व राज्य सरकारें मिलकर सड़क दुर्घटनाओं को रोकने का चलाएं अभियान

सड़कों को अतिक्रमण और बेसहारा पशुओं से बचाने के जो उपाय किए जाते हैं, वे स्थायी नहीं रह पाते। आमतौर पर स्थानीय नेताओं के हस्तक्षेप से ऐसे प्रबंध निषप्रभावी हो जाते हैं। उचित यह होगा कि केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर सड़क दुर्घटनाओं को रोकने का अभियान चलाएं।

यह संतोषजनक है कि राजमार्गों पर दुर्घटना के लिहाज से जोखिम बहुल माने-जाने वाले ठिकानों की पहचान कर उन्हें ठीक करने का काम किया जा रहा है। बीते तीन साल में ऐसे ६० प्रतिशत ठिकानों को दुरुस्त कर दिया गया है। ब्लैक स्पॉट कहे जाने वाले ऐसे जोखिम बहुल ठिकानों को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर ठीक करना कितना आवश्यक है, यह इससे समझा जा सकता है कि जो ऐसे स्थल ठीक कराए गए हैं, उनमें बीते तीन सालों में २८,००० मौतें हुई थी।

साफ है कि शेष ऐसे ठिकानों को शीघ्र ठीक कराकर तमाम मौतों को रोका जा सकता है। यह जरुरी काम किए जाने के साथ यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सड़कों पर न तो नए जोखिम बहुल ठिकाने बनने पाएं और न ही उन कारणों की अनदेखी होने पाए। जिनके चलते मार्ग दुर्घटनाओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। भारत उन देशों में शीर्ष पर है जहां कम वाहन होने के बावजूद अधिक मार्ग दुर्घटनाएं होती हैं। समय के साथ मार्ग दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। कुछ वर्ष पहले तक मार्ग दुर्घटनाओं में जान गंवाने वालों की संख्या करीब एक लाख सालाना हुआ करती थी, लेकिन यह आंकड़ा एक लाख को पार कर रहा है।

कहीं ऐसा तो नहीं कि जैसे-जैसे नए राजमार्ग बन रहे हैं और पुराने बेहतर होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे मार्ग दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं? इस प्रश्न पर न केवल गहनता से विचार होना चाहिए, बल्कि मार्ग दुर्घटनाओं को कम करने के लिए हरसंभव उपाय भी किए जाने चाहिए। इन उपायों पर केंद्र और राज्य सरकारों, दोनों को ध्यान देना होगा। निश्चित रुप से अच्छी सड़कें उन्नति का मार्ग हैं, लेकिन यह ठीक नहीं कि उनके निर्माण के साथ ही वे दुर्घटनाओं की गवाह बनती रहें। सड़क दुर्घटनाओं का कारण केवल जोखिम वाले ऐसे ठिकाने नहीं जो या तो गलत डिजाइन की उपज हैं या फिर अतिक्रमण की।

इसके अलावा खटारा वाहन, अकुशल चालक और यातायात नियमों की अनदेखी भी सड़क दुर्घटनाओं का कारण बनती है। अपने देश में राजमार्गों पर ट्रक, बस और कार से लेकर ट्रैक्टर, दोपहिया वाहन और बैलगाड़ी तक चलते दिखते हैं। कभी-कभी तो उलटी दिशा में भी वाहन चलते नजर आ जाते हैं, क्योंकि तय दिशा और लेन पर चलने का नियम भले हो, लेकिन उसका पालन मुश्किल से होता है। इसका कारण यह भी है कि न तो यातायात पुलिस सजग है और न ही औसत चालक।

एक समस्या यह भी है कि सड़कों को अतिक्रमण और बेसहारा पशुओं से बचाने के जो उपाय किए जाते हैं वे स्थायी नहीं रह पाते। आमतौर पर स्थानीय नेताओं के हस्तक्षेप से ऐसे प्रबंध निषप्रभावी हो जाते हैं। उचित यह होगा कि केंद्र और राज्य सरकारें मिलकर सड़क दुर्घटनाओं को रोकने का अभियान चलाएं।

संघ ने किया सफाईकर्मियों का सन्मान

गोंदिया – सेलटेक्स कॉलोनी फुलचूर टोला की सुदर्शन संघ शाखा द्वारा दिवाली मिलन के उपलक्ष मे ग्राम पंचायत मे कार्यरत ६ सफाई कर्मचारीयों का सत्कार स्थानिक संघ शाखा स्थल पर किया। इस अवसर पर सफाईकर्मियों को गुलदस्ता, श्रीफल एवं वस्त्र देकर सन्मान किया गया।

इस समारोह के अध्यक्ष सेलटैक्स कॉलोनी निवासी जेष्ठ नागरिक डॉ. ठवरे इनके तथा उपस्थित अतिथियों के करकमलो द्वारा यह सत्कार समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह का संचालन भोजराज दरवड़े तथा आभार प्रदर्शन आकरे द्वारा किया गया।

सभी संघ स्वयंसेवकों ने अपने घर से दीपावली का नास्ता एवं मिठाई लायी थी। सबने मिलकर सफाईकर्मियों के साथ अल्पाहार किया। बाल स्वयंसेवक ओझस पूरी ने घर बने हुए गुलदस्ते लाये। अपनी प्रस्तावना मे उमेश मेंढे इन्होने संघ द्वारा वर्ष भर चलने वाले विविध उपक्रम की जानकारी दी तथा सामाजिक समरसता बढ़ाने हेतू ऐसी कार्यक्रम की आवश्यकता बताई। सफाईकर्मियों के प्रमुख सत्यम सोनवाने ने इस सत्कार पहल की बहुत प्रशंसा की और सभी लोगों को सफाईकर्मियों को सहकार्य करने की आवश्यकता बताई। इस समारोह मे सेलटैक्स कॉलोनी के ६५ नागरिक सम्मिलित हुए थे। सत्कार समारोह को सफल बनाने हेतू संघ शाखा के कार्यवाह संतोष वंजारी, मधुकर शेंडे, उपापसराव बान्द्रे, फूलचूर टोला सरपंच कोमल धोटे, गणेश पूरी, दिलीप खंडेलवाल, बड़गे, श्याम कावले, रमेश मेंढे, देशमुख, रहिले, श्रीकांत अग्रवाल, संदीप धोटे, ताराचंद चव्हान, श्रीकांत सोनवाने तथा अनेक बाल स्वयंसेवकों ने सहकार्य किया।

आदिवासी गोवारी समुदाय ने की गायगोधन पूजा

गोंदिया – दिवाली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजन की परंपरा है। परंपरा के अनुसार आदिवासी गोवारी समाज संगठन की गोंदिया शाखा ने ५ नवंबर को आदिवासी गोवारी संगठन के अध्यक्ष सुशील राउत के मार्गदर्शन में संजयनगर, मरारटोली, छोटा गोंदिया, सेंदरीटोला, पिंडकेपर में गोवर्धन पूजा का आयोजन किया। आदिवासी गोवारी समाज बंधुओं ने पारंपरिक तरीके से किया गायगोधन पूजन।

इस अवसर पर आदिवासी गोवारी एसोसिएशन के अध्यक्ष सुशील राउत, बबन नेवारे, दीपक नेवारे, मनोज नेवारे, राजेश नेवारे, राजेश राउत, ताराचंद राउत, नितिन अंबेडकर, विनोद सोनवणे, ओम राउत, विकास नेवारे, यशवंत नेवारे, नवीन नेवारे आदि मौजूद थे। आदिवासी गोवारी समुदाय अनादि काल से परंपरा का पालन कर रहा है। आदिवासी संस्कृति, दार जगनी, ढल पूजन, गायगोधन, गाव नाचनी ने दिवाली मनाई। यह परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। इसके तहत ५ नवंबर को संजयनगर, मरारटोली, छोटा गोंदिया, सेंद्रिटोला, पिंडकेपार में गोवर्धन पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गोवर्धन पूजा धूमधाम से मनाई गई। इस कार्यक्रम में गोवारी समुदाय के नागरिकों के साथ क्षेत्र के पुरुषों और महिलाओं ने भाग लिया।

इंजि. राजीव ठकरेले के प्रयासों से बंद पड़ी स्ट्रीट लाईट हुई रोशन

आसोली जिप क्षेत्र डुबा था अंधेरे में दीपावली पर हुए मार्ग रोशन

ग्राम आसोली की स्ट्रीट लाइट पिछले सात-आठ महीनों से बंद हो गई थी। जिसका कारण था कि देवेंद्र फडणवीस की सरकार द्वारा सन २०१८ से २०१९ तक वित्तीय बजट के पैसे खर्च कर लिए गए। जबकि वित्तीय बजट में से जिला परिषद के माध्यम से स्ट्रीट लाइट बिल भरने थे। फड़नविस सरकार की नितीयो के कारण पूरा बोझ ग्राम पंचायतों पर आ गया। जिसके कारण अधिकांश ग्राम पंचायतों के स्ट्रीट लाइट बंद हो गई है। दीप उत्सव का त्यौहार दीपावली के पावन पर्व को देखते हुए नानाभाऊ पटोले के सहयोग से महाराष्ट्र इलेक्ट्रिसिटी वितरण कंमनी के आला अधिकारियों से बातचीत कर इंजि राजीव ठकरेले ने अपने आसोली जि.प क्षेत्र के ग्राम असोली की स्ट्रीट लाइट बगैर बिल भरें त्योहार के लिए चालू करवाईं है। प्रदेश अध्यक्ष नानाभाऊ पटोले से इस विषय चर्चा करते वक्त गोंदिया जिले के कार्याध्यक्ष अशोक (गप्पू) गुप्ता, आसोली के सरपंच के पती लोकचंद धुर्वे, अनुसूचित विभाग के जिला सचिव एड शैलेन्द्र गडपायले, श्रीकांत बंसोड, राजकुमार (पप्पू) पटले, सचिन मेश्राम इत्यादि पदाधिकारी उपस्थित थे।

दीप उत्सव के इस पावन पर्व पर गाव की स्ट्रीट लाइट चालू होने पर दुलीचंद धुर्वे, जितेंद्र राहंगडाले, बिरज गायधने, बंडू दहिकर, विजय बंसोड, ग्राम पंचायत सदस्य महेंद्र गड़पायले, चरणदास मेश्राम, प्रहलाद गणवीर, रवि वासनिक, सुदर्शन मेश्राम, विनोद बंसोड, अरुण बंसोड, रामनाथ सोमकुवर, प्रमोद बंसोड, प्रकाश नंदागवली, विजय बंसोड, विजय झाडूदास बंसोड, प्रकाश गड़पायले, अशोक मेश्राम, रविचंद्र बंसोड, वसंत मेश्राम, कमल मेश्राम, दिलीप बिनझाले, रिंकू नंदागवली, आतिश खोबरागड़े, सुदर्शन गड़पायले महेंद्र बिनझाले, राजु गनवीर, सुबोध मेश्राम, राहुल गजभिए, प्रमोल मेश्राम, अनिकेत वैद्य, सुशांत वैद्य, बिट्टू गड़पायले इत्यादि पार्टी के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारीयों ने आभार व्यक्त किया है।

कमरगांव मे रानी अवंतीबाई प्रतिमा का भूमिपूजन

गोंदिया – प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमर शहीद वीरांगना महारानी अवंतीबाई लोधी की प्रतिमा अनावरण के लिए भूमि पूजन का कार्यक्रम ग्राम कमरगांव में आयोजित किया गया। इस कार्य के लिए ओंकारलाल नागपुरे (उत्तम नागपुरे) ने जमीन दान देकर समाज एकता की नींव रखी। सुबह १० बजे से मंत्रोचार और पूजा पाठ द्वारा विधिवत अवंतीबाई के चित्र की पूजा अर्चना कर सभी ग्रामवासियों व मुख्य अतिथियों द्वारा भूमिपूजन किया गया

इस कार्यक्रम के अध्यक्ष मंसाराम नागपुरे, विशेष अतिथी लोधी शिव नागपुरे (राष्ट्रीय अध्यक्ष अवंतीबाई लोधी महासभा), डॉ.संजय माहुले, लोधी राजीव ठकरेले, मुकेश नागपुरे, चंद्रकुमार अटरे, के.आई माहूले, मदनलाल अटरे, नरेश बिरनवार, देवेश नागपुरे, ओमेश्वर बिरनवार, अशोक बिरनवार, हरिचंद बिरनवार, हिम्मतसिंह बिरनवार, थानसिंह लिल्हारे, हेमराज नागपुरे, शिक्षक हेतराम नागपुरे, हुलीचंद मस्करे, संकेश बिरनवार, गोवर्धन बिरनवार, देवराम दमाहे, गजानन दमाहे, खेमराज दमाहे, रामेश्वर दमाहे, बलिराम दमाहे, उम्मेदसिंह, अशोक, दीपक नागपुरे, धनराज दमाहे, लखनलाल अटरे, अंगद अटरे, योगराज लिल्हारे, टोइंद्र नागपुरे, शालीकराम दमाहे, हेमचंद नागपुरे, नीलकंठ दमाहे, भाऊलाल दमाहे, देबीलाल बीरनवार, शिवभजन मस्करे, उमाशंकर मस्करे, देवचंद मस्करे, महावीर बिरनवार, भैयालाल दमाहे, महेंद्र दमाहे, सेवकराम मस्करे, पंकज लिल्हारे, उरकुड़ा मस्करे, शैलेश मस्करे, हेतराम मस्करे, रामलाल दमाहे, पीरमलाल लील्हारे, द्वषिलाल लिल्हारे, हितेंद्र बिरनवार, जगदीश दमाहे, बेनिराम दमाहे, घनश्याम दमाहे, नरेन्द्र अटरे, भूमेश्वर नागपुरे, शिशुपाल नागपुरे, पूरनलाल बिरनवार, हीवराज बिरनवार, रामेश्वर बिरनवार, बंडू दमाहे, रामेश्वर लिल्हारे, धनराज नागपुरे, सुरेश चिखलोंडे, राधेश्याम बीरनवार, तोकलाल अटरे, सहेसराम दमाहे, शंकर लिल्हारे, रविन्द्र लिल्हारे, अमरकंठ लिल्हारे, देवकरण दमाहे, श्रीमती कुशमनबाई मस्करे, डीलनबाई मस्करे, प्रमिला बसोने सहित समस्त ग्रामवासी उपस्थित थे। राष्ट्रीय अध्यक्ष लोधी शिव नागपुरे जिन्होंने लोधी समाज के इतिहास के साथ-साथ समाज की शिक्षा, दशा-दिशा पर मार्गदर्शन किया। सभी प्रमुख अतिथियों ने अपने मार्गदर्शन मे समाज की मजबूती सामाजिक कुरीतियां तथा शिक्षा पर विशेष जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर संजय माहुले एवं आभार प्रदर्शन नरेश बिरनवार ने माना।

महिलाओं के सम्मान में टायगर है मैदान में

गोंदिया – टाइगर ग्रुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पहलवान डॉ. तानाजीभाऊ जाधव, गोंदिया जिला प्रमुख अन्ना देवल ने अपराध मुक्त भारत का संकल्प लेकर यह ग्रुप गरीबों की मदद के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहता है। करोना काल के चलते जहां भाई-भाई का नहीं होता ऐसे समय टायगर ग्रुप ने बढ़-चढ़कर सहयोग किया है। सबसे ज्यादा इस ग्रुप में महिलाएं यंग जनरेशन आकर्षित है।

ना फ्लेक्स, न प्रचार, न लाइक, न कमेंट सिर्फ जन सेवा और गरीबों की मदद, असामाजिक तत्वों के खिलाफ खड़े रहने कोई भी हद तक जाने को तैयार रहता है। यह ग्रुप रेलवे स्टेशन में कभी भेल, कभी पुलाव, कभी चाय-बिस्किट बांटने का काम काम सबसे पहले टायगर ग्रुप ने ही किया था। सिविल लाइन में एक टीन एजर युवती को प्लेटलेट की कमी हो गई थी तो अन्ना देवल के मार्गदर्शन पर टायगर ग्रुप के तीन युवको ने बढ़-चढ़कर योगदान दिया। उपविभागीय पुलिस अधीक्षक जगदीश पांडे को करोना काल के चलते सैकड़ों मास्क और सैनिटाइजर की बोतल टायगर ग्रुप के तरफ से खुद जिला प्रमुख अन्ना देवल ने दिया ।

जैसा कि उन सबका एक नारा है फक्त एक कॉल आनी मेटर सॉल। इसी माध्यम को आगे रखकर यह ग्रुप लोगों के दिलों को जीते हुए आगे बढ़ते जा रहा है। आज देखते ही देखते पूरे महाराष्ट्र व एमपी भर में २० लाख लोग इस संगठन में जुड़ चुके हैं। यह सब कुछ यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम पर आपको देखने मिल जाएगा। इनके काम की जानकारी देना है तो टाइगर ग्रुप का एक फोटो देख लो फोटो ही बताती है कि युवा कितने उत्साहित रुप से जनता सेवा के लिए गोरगरीबों की मदद के लिए बढ़-चढ़कर आगे आ रहे हैं और अंदरुनी काम कर रहे हैं।

बैटल स्पोर्ट्स डांस एसोसिएशन की सभा सम्पन्न

गोंदिया जिले मे जी-९ डान्स स्टूडियो मे बैटल स्पोर्ट्स डान्स एसोसिएशन की जिला सभा सम्पन्न हुई। जिसमे मुंबई से आये पदाधिकारी आनंद द्वारा बैटल डान्स एसोसिएशन की जानकारी दी। जिसमे प्रमुख रुप से डान्स कोरियग्राफर राहुल बघेले, राजा अरखेल, अक्षय विधाते, मनाली मुरकुटे, क्रीड़ा शिक्षक चेतन मानकर, विशालसिंग ठाकुर उपस्थित थे।

बैटल डान्स स्पोर्ट्स यह स्कुल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया से भी सलग्न हुआ है। साथ मे इसमें कम्पटीशन के १३ अलग-अलग लेवल हैं। जिसमे तरह-तरह के डान्स फॉर्म हैं। इस एसोसिएशन मे ४ से लेकर २५ साल के डान्सर भाग ले सकते हैं व खुला गट २५ साल के ऊपर के १४, १७, १९ आयु गट के अनुसार इसकी प्रतियोगिता होंगी।

इस बैटल स्पोर्ट्स डान्स के प्रचार व प्रसार हेतु इस सभा का आयोजन किया गया था। जिसमे जो स्टूडेंट

अच्छे डांसर हैं इनके लिए जिलास्तरीय से लेकर अंतराष्ट्रीय प्रतियोगिता तक भाग ले सकते है। ऐसी जानकारी आंनद सर (मुंबई) द्वारा दी गई। सभा की समाप्ति पश्चात आभार प्रदर्शन राहुल बघेले द्वारा किया गया।

आंवला नवमी

आंवले के पेड़ की पूजा का महत्व

कार्तिक माह शुक्ल पक्ष की अक्षय नवमी को आमला नवमी भी कहते हैं। इस खास दिन पर आंवले के पेड़ की पूजा की जाती है। शास्त्रों के मुताबिक नवमी से लेकर पूर्णिमा तक भगवान विष्णु का आवंले के पेड़ पर वास रहता है। अक्षय नवमी का यह दिन इतना विशेष होता है कि किसी भी कार्य की शुरुआत बिना किसी मुहुर्त देखे की जा सकती है। वहीं संतान प्राप्ति के लिए इस दिन आंवले के पेड़ की विधिविधान से पूजा व व्रत करना फलदायी होता है। इसके अलावा इस दिन आंवला व प्रसाद स्वरुप चखने से सभी दुख व रोग दूर होते हैं।

इसे इच्छा नवमी भी कहा जाता

अक्षय नवमी को लेकर मान्यता है कि इस दिन लोग जिस इच्छा के साथ पूजन करते हैं उनकी वह इच्छा जरुर पूर्ण होती है। इसलिए इसको अक्षय नवमी के साथ ही इच्छा नवमी भी कहते हैं। शास्त्रों के मुताबिक इसी दिन महर्षि च्यवन ने आंवला का सेवन किया था, जिसके बाद उन्हें पुन: नव यौवन की प्राप्ति हुई थी। इसीलिए इस दिन आंवला का सेवन जरुर किया जाता है। वहीं यह भी मान्यता है कि इसी दिन भगवान श्रीकृष्ण ने बाल लीलाओं के साथ वृदांवन की गलियां छोड़ कर्तव्यों को पूरा करने के लिए मथुरा प्रस्थान किया था।

ज्यादा प्रचलित है यह व्रत कथा

इस व्रत को लेकर क्षेत्रीय भाषाओं में कई कथाएं प्रचलित हैं। जिसमें एक कथा यह भी है। कहते हैं कि एक व्यापारी और उसकी पत्नी संतान होने से बहुत दुखी थे। इस दौरान लोग उन्हें विभिन्न प्रकार की सलाह देते थे। ऐसे में एक दिन किसी ने उन्हें भैरव बाबा के सामने किसी बच्चे की बलि देने की सलाह दी। इसके लिए व्यापारी नहीं तैयार हुआ लेकिन उसकी पत्नी तैयार हो गई। व्यापारी के लाख मना करने के बावजूद उसकी पत्नी ने उससे छुपकर संतान प्राप्ति की लालसा एक बच्चे की बलि दे दी। इसके बाद व्यापारी की पत्नी को कई बीमारियां हो गई। बीमारियों से पीड़ित पत्नी ने उसे जब यह बात बताई तो वह क्रोधित हुआ। हालांकि बाद में वह पत्नी को गंगा जी में स्नान कराने ले गया जिससे कि उसके पाप धुल सकें। यहां पर व्यापारी की पत्नी ने गंगा जी की अराधना की तो गंगा जी उसके सामने अचानक से एक बूढ़ी स्त्री के रुप में आकर खड़ी हो गई। व्यापारी की पत्नी ने उसे प्रणाम किया और उसके कष्टों के बारे में पूछा। गंगा जी ने उसे इन कष्टों से मुक्ति पाने के लिए कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को व्रत रखने का सरल उपाया बताया। इसके साथ ही इस दिन आंवले के पेड़ की पूजा करने की सलाह दी। कुछ समय बाद व्यापारी व उसकी पत्नी को पुत्र की प्राप्ति हुई और उसके सारे कष्ट दूर हो गए। इसलिए इस दिन आंवला की पेड़ की पूजा करने, उसका प्रसाद चखने और वहीं पर भोजन करने का रिवाज है।

पूजन का है ये वैज्ञानिक कारण

वहीं इस पूजा का एक वैज्ञानिक पहलू भी है। वैज्ञानिकों के मुताबिक जब आंवला के पेड़ की पूजा होती है तो मौसम तेजी से बदल रहा होता है। ऐसे में इस दौरान आवंला के वृक्ष के करीब जाना और उसका सेवन करना लाभकारी होता है। आंवले के पेड़ में बड़ी मात्रा में विटामिन सी पाया जाता है। पेड़ जलने व सूखने के बाद भी इसमें विटामिन सी मौजूद रहता है। स्वस्थ्य रहने के लिए विटामिन सी बहुत जरुरी होती हैं क्योंकि यह शरीर की मूलभूत रासायनिक क्रियाओं में यौगिकों का निर्माण और उनके कार्य में एक विशेष भूमिका निभाती है।

मार्ग व नाली का अधूरा निर्माण कार्य

प्रतिदिन घटित हो रही दुर्घटना, प्रभाग १० के नागरिकों को हो रही परेशानी

गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत आने वाले प्रभाग १० के रिंग रोड मजार के सामने स्थित मनोज मेडिकल के मार्ग के मोड़ का मार्ग व नाली का निर्माण कार्य अधूरा किया गया है। जिसके चलते प्रतिदिन उपरोक्त मार्ग से गुजरने वाले वाहन चालकों के वाहन मार्ग के गड्ढे व नाली में फसने से दुर्घटना घटित होने के साथ ही वाहन चालक जख्मी हो रहे हैं। जिससे परिसर के नागरिकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इस संदर्भ में परिसर के नागरिकों द्वारा नगर परिषद प्रशासन, नगराध्यक्ष अशोक इंगले, मुख्य अधिकारी करण चौहान को निवेदन देकर जल्द से जल्द अधूरे निर्माण कार्य को पूर्ण करने की मांग की है। उल्लेखनीय है कि यह परिसर का गंभीर मामला क्षेत्र के युवा सामाजिक कार्यकर्ता राज शुक्ला द्वारा गंभीरता से उठाते हुए नगर परिषद प्रशासन से सुधार की मांग की है।

उपरोक्त निवेदन देने वालों में परिसर के नागरिक केशव मेश्राम, राजेश कनोजिया, विजय रिनाइत, महेंद्र कुंभलवार, सुखदेव ढाले, सुनीता वाटखेडे, गुरेदर लांजेवार, संजू चौरागढ़े, राखी नाकाडे, आशा जमईवार, निलेश कांबले सहित परिसर के अनेक नागरिक उपस्थित थे।

मिशन आधार से निराधारों के घरों में जल रहे खुशियों के दीप

गोंदिया – एकात्मिक आदिवासी विकास प्रकल्प अधिकारी विकास राचेलवार की संकल्पना से मिशन आधार इस उपक्रम के माध्यम से जरुरतमंद व निराधारों को आवश्यक सामग्री व नगद राशि देकर उनके घरों में खुशी के दीप जलाकर निराधारों को आधार देने का उपक्रम शुरु किया गया है। इस उपक्रम के तहत जिले के जरुरतमंदो को कपडे, मिठाईयां, अनाज, नगद राशि तथा जीवनावश्यक वस्तूओं का वितरण किया जा रहा है। कोरोना काल में अनेक परिवार निराधार हो गये है। वहीं जिले में ऐसे आदिवासी परिवार हैं, जिन्हें जीने के लिए आधार नहीं मिल रहा है। यहां तक की वृध्द विधवा महिलायें व छोटे निराधार बालकों का भविष्य असुरक्षित होते हुये दिखाई दे रहा है। ऐसे जरुरतमंद व निराधारों को आधार की जरुरत है। जिसे देखते हुए एकात्मिक आदिवासी विकास प्रकल्प अधिकारी विकास राचेलवार की संकल्पना से मिशन आधार सोशल मीडिया तयार किया गया है।

इस मिशन आधार के तहत जिले के जरुरतमंद, निराधार आदिवासियों को जीवनावश्यक वस्तूओं का वितरण कर उन्हें आधार देने का उपक्रम गत दिनों से शुरु कर दिया गया है। इस मिशन में आदिवासी विकास प्रकल्प के अधिकारी, कर्मचारी, अनुदानित, बिना अनुदानित आदिवासी आश्रम स्कूल तथा जिले के समाजसेवी सामिल हुये है। इन दानदाताओं व्दारा चंदा जमा कर जरुरतमंदो के घर जाकर कपडे, मिठाईयां, अनाज, दवाईयां, नगद राशि सहित जीवनावश्यक वस्तूएं भेट स्वरुप दी जा रही है। दिपावली उत्सव में निराधारों के घरों में खुशियों के दीप जले इसके लिए मिशन आधार से जुडे समाजसेवियों व्दारा स्वयंस्फूर्ति से उनकी जरुरतों के हिसाब से मदद कर रहे है। अब तक जिले के सैकडो निराधारों को आधार देकर उनके चेहरों खुशियां लौटायी गई है।

प्रधानमंत्री आवास योजना की (ड) सूची में अनियामितता

वंचितों को लाभ दिलाने विधायक अग्रवाल ने केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री से की मुलाकात

गोंदिया – प्रधानमंत्री आवास योजना में (ड) सूची बनाई गई, जिसके अंतर्गत नागरिको को आवास दिए जा रहे है। लेकिन (ड) सूची को ऑनलाईन किया गया है, उसमे बड़े पैमाने पर पंचायत समिति स्तर पर अनियमितता (धांदली) हुई है। और जानबूझकर अनेक लोगों के नाम सूची से काटे गये है। जो पात्र थे, उन्हें भी आपात्र दिखाया गया है। गोंदिया तहसील में कुल ३४ हजार ६५४ नागरिको का सर्वे हुआ जिसमें २४९८२ नागरिक पात्र हुए और ७६९२ नागरिक अपात्र हुए। इस तरह पुरे गोंदिया जिले में १ लाख ४३ हजार ६१४ लोगो का सर्वे किया गया था। जिसमें १०७९०५ नागरिको को पात्र एवं ३४९३५ लोगो को अपात्र किया गया था। (ड) सूची में बड़े पैमाने में अपात्र होने का कारण सही तरीके से सर्वे का ना होना था। अपात्र लोगो की सूची में ऐसे नागरिक हैं, जिन्हें रहने के लिए मकान नहीं है, और न ही वे रहने लायक स्तिथि में नही है। साथ में गोंदिया तहसील में १५ हजार एवं गोंदिया जिले में ५० हजार ऐसे परिवार है जिनका नाम न तो पात्र सूची में है, ना तो अपात्र सूची में है। और उनके पास रहने लायक मकान ही नही है।

ऐसी तमाम समस्याओ को लेकर विधायक विनोद अग्रवाल ने दिल्ली में केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री गिरिराज सिंह से मुलाकात की। जिसमें विधायक विनोद अग्रवाल ने आवास योजना हेतु दुबारा सर्वे कर जरुरतमंद अपात्र नागरिको को (ड) की पात्र सूची में शामिल करने हेतु विनंती की है। जिस पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने आवास योजना २०२२ तक पूर्ण होने का लक्ष्य रखा गया था, जो अभी पूर्ण होने के कगार पर है। जिसे पूर्ण करते ही मार्च के बाद अपात्र एवं जिनके पास आवास ही नही है उनके बारे में विचार किया जायेगा, ऐसा आश्वासन केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने दिया दिया है।

पालक मंत्री के हस्ते मिश्रा व बनकर सम्मानित

गोंदिया – कोरोना संक्रमण काल के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले नगर परिषद के कर्मचारी मुकेश मिश्रा व धनराज बनकर को पालक मंत्री नवाब मलिक के हस्ते सम्मानित किया गया। गौरतलब है कि कोरोना काल के दौरान गोंदिया नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत नप द्वारा नागरिकों की सुरक्षा व स्वास्थ्य के लिए विभिन्न अभियान चलाए गए थे। जिसमें बेघर नागरिकों को आवास उपलब्ध कराया जाना, मेरा परिवार मेरी जिम्मेदारी अभियान के अंतर्गत परिवारों का स्वास्थ्य संबंधित सर्वेक्षण तथा कोविड टीकाकरण के लिए ऑपरेशन कवच कुंडल चलाया गया। जिसमें जिन नागरिकों ने टीका नहीं लगाया उन्हें टीका लगाने के लिए प्रोत्साहित करने जैसे कार्यक्रमों में गोंदिया नगर परिषद के बाजार विभाग के प्रमुख मुकेश राजेंद्र मिश्रा तथा नागरिक उपजीविका अभियान के प्रमुख धनराज बनकर ने विशेष कार्य किया गया था। जिसके चलते उपरोक्त कर्मचारियों को राज्य के अल्पसंख्यक विकास तथा गोंदिया जिले के पालक मंत्री नवाब मलिक के हस्ते जिलाधिकारी कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

अग्रवाल अविवाहित युवक-युवती, विधवा विधुर परिचय पुस्तिका का विमोचन

गोंदिया – अग्रवाल सोशल मंच गोंदिया द्वारा अग्रवाल समाज के अविवाहित युवक-युवती व विधवा-विधुर की परिचय पुस्तिका बनाई गई है। जिसमें करीब ५०० परिचय के साथ परिचय पुस्तिका का विमोचन अग्रसेन भवन में सोशल मंच के संयोजको कार्यकर्ताओं व अग्रवाल समाज के प्रमुख वरिष्ठ नागरिकों की उपस्थिति में सोशल मंच के संयोजक अशोक सी अग्रवाल, राम अग्रवाल, स्मारक समिति के अध्यक्ष हेमेंद्र पोद्दार की प्रमुख उपस्थिति में विष्णु प्रसाद अग्रवाल देवरी, रमेशचंद्र अग्रवाल व सावलराम अग्रवाल आमगांव, कैलाशचंद्र रुंगटा, मोहनचंद्र चांगरोड़िया, सुनील अग्रवाल बारदानावाले, हुकुमचंद अग्रवाल शुभलक्ष्मी, हुकुमचंद अग्रवाल मामा, प्रफुल्ल गोयल, सुरेश चांगरोडिया, ललित अग्रवाल, दिनेश दादरीवाल, दिनेश अग्रवाल गीता, लालासर, महेश अग्रवाल माया, शैलेश अग्रवाल केडी, विजय अग्रवाल आमगांव, प्रतीक अग्रवाल आमगांव, पुरुषोत्तम मोदी, निर्मल अग्रवाल, प्रकाश अग्रवाल, राधाकिशन छोटू अग्रवाल की उपस्थिति में संपन्न हुआ। विशेष यह है कि समाज के लिए अत्यंत लाभकारी व उपयोगी यह पुस्तिका अग्रेसन भवन गोंदिया में समस्त अग्रवाल समाज के लिए उपलब्ध है। सभी समाजबंधु इसका लाभ अवश्य ले ऐसा आव्हान अग्रवाल सोशल मंच द्वारा किया गया है। तथा कार्यक्रम का संचालन रवीबाबू अग्रवाल ने किया।

राजेंद्र जैन के हस्ते बेरडीपार में शासकीय धान खरीदी केंद्र का शुभारंभ

सांसद प्रफुल पटेल ने किया वादा पूरा

गोंदिया – तिरोड़ा तहसील के अंतर्गत आने वाले ग्राम बेरडीपार में राधे सेती साधन सामग्री सहकारी संस्था के शासकीय आधारभूत धान खरीदी केंद्र का शुभारंभ पूर्व विधायक राजेंद्र जैन के हस्ते संपन्न हुआ। खरीफ मौसम २०२१ -२२ में धान खरीदी केंद्र दीपावली के पूर्व शुरु कर किसानों से धान की खरीदी की जाएंगी ऐसा आश्वासन सांसद प्रफुल पटेल द्वारा दिया गया था। जिनका वादा पूरा करने हेतु जिले जिले के किसानों को धान की बिक्री किए जाने में किसी भी प्रकार की परेशानी ना हो तथा व्यापारियों को कम भाव में धान की बिक्री ना करना पड़े। इसके लिए सांसद पटेल शासकीय आधारभूत धान खरीदी केंद्र शुरु करने के लिए निरंतर प्रयासरत थे, तथा खरीफ मौसम में धान खरीदी केंद्र तत्काल शुरु करने हेतु वह निरंतर प्रशासन के संपर्क में थे। इसके लिए राज्य के संबंधित विभाग के मंत्री के साथ सभा लेकर धान खरीदी केंद्र शुरु करने का निर्णय लिया गया था। सांसद प्रफुल पटेल के प्रयासों से धान खरीदी केंद्र शुरु होने पर परिसर के किसानों ने सांसद पटेल का आभार व्यक्त किया।

उद्घाटन के अवसर पर पूर्व राजेंद्र जैन के साथ श्रीमती राजलक्ष्मी तुरकर, राजू एन. जैन, प्रेमकुमार रहांगडादाले, कैलाश पटले, रविकांत बोपचे, राजेश तुरकर, संतोष कटारे, सुखदेव बिसेन, थानसिंह हरिंखेड़े, प्रमिला कटारे, दीपा वाघड़े, रामेश्वर गभने, राजेंद्र वाघड़े, यादोराव बिसेन, विद्याधर राउत, मुकेश कटारे और बड़ी संख्या में किसान, पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

तहसील के किसी भी शासकीय खरीदी केंद्र पर बिक्री की मिले मंजूरी -विधायक रहांगडालें

गोंदिया जिला धान उत्पादक जिला होने के चलते किसानों द्वारा धान की फसल का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है। तथा अपनी फसल वे शासकीय आधारभूत धान खरीदी केंद्र पर बिक्री करते हैं। जिसके लिए किसानों को तहसील के किसी भी शासकीय आधारभूत धान खरीदी केंद्र में बिक्री की सुविधा प्राप्त हो इसके लिए विधायक विजय रहांगडालें ने महाराष्ट्र स्टेट को ऑपरेटिव फेडरेशन के व्यवस्थापक को पत्र लिखकर मांग की है। गौरतलब है कि पनन महामंडल द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों के अनुसार जिन संस्थाओं को ग्रामों से जोड़ा गया है। उसी संस्था में संबंधित ग्रामों के किसानों को धान बिक्री किया जाना बंधनकारक है ऐसी परिस्थिति में जिले के कुछ स्थानों पर किसानों की तुलना में धान खरीदी केंद्रों की संख्या कम होने तथा केंद्रों से जुड़े गए ग्रामों के बीच काफी दूरी होने से किसानों का धान एक एक महीने तक तुल नहीं पाता है, तथा नैसर्गिक आपदा के चलते किसानों को काफी नुकसान होता है इस संदर्भ में किसानों द्वारा बड़ी संख्या में शिकायत कर तहसील के किसी भी आधारभूत खरीदी केंद्रों में धान बिक्री करने की मांग की है ऐसी परिस्थिति में किसानों की सुविधा के अनुसार तहसील के किसी भी शासकीय आधारभूत धान खरीदी केंद्र में बिक्री करने की सुविधा प्राप्त हो इसके लिए विधायक विजय रहांगडालें द्वारा मार्केटिंग फेडरेशन के व्यवस्थापक को पत्र लिखकर मांग की है कि जल्द से जल्द इस संदर्भ में कार्रवाई कर आदेश जारी किया जाए जिससे किसानों को सुविधा प्राप्त हो सके।

साहित्य मंडल के दीप मिलन समारोह में काव्य की फुलझड़ियां

गोंदिया – साहित्य मंडल गोंदिया का दीपावली मिलन समारोह नगर के वरिष्ठ कवि प्रकश मिश्रा के निवास मधु कुंज गणेश नगर में रविवार ७ नवम्बर को दोपहर में आयोजित किया गया, जिसमें काव्य के विविध रसों से ओतप्रोत कवि गोष्ठी का आनंद रसिकों ने उठाया। अध्यक्षता संस्था के वरिष्ठ पदाधिकारी श्री जितेन्द्र तिवारी ने की। संचालन का कुशल दायित्व चिरपरिचित काव्य हस्ताक्षर श्री छगन पंचे छगन ने निर्वाह किया। माँ सरस्वती की पूजा-आराधना पश्चात कवि शशि तिवारी की मधुर वाणी में माँ शारदा की वंदना से कविगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। कवि निखिलेशसिंह यादव, मनोज बोरकर मुसव्विर, प्रमोद सोनी, प्रकाश मिश्रा, शशि तिवारी एवं छगन पंचे ने हास्य-व्यंग्य, गीत, ग़ज़ल, कुंडलियाँ आदि सुनाकर रसिकों को आनंदित किया। अतिथि स्वागत पं. कन्हैया तिवारी ने किया।

म.ज्यो.फुले किसान ऋण मुक्ति योजना आधार प्रमाणीकरण अनिवार्य है

गोंदिया – सहकारिता विपणन एवं वस्त्र विभाग के १७ दिसम्बर २०१९ के शासनादेश के अनुसार १ अप्रैल २०१५ से ३१ मार्च २०१९ तक इस अवधि के दौरान फसल ऋण योजना-२०१९ शुरु की गई है। गोंदिया तहसील में महात्मा ज्योतिराव फुले किसान ऋण राहत योजनान्तर्गत ४४७५ खातों को पोर्टल पर अपलोड कर दिया गया है। संख्या के साथ ४२२२ पात्र खाते प्राप्त हुए हैं। उनमें से ४१३१ किसानों का आधार प्रमाणीकरण हो चुका है, जिसमें से ४०८६ किसान हैं कर्जमाफी का लाभ दिया गया है। संबंधित के खाते में १५.६९ करोड़ राशि वर्गीकृत है। लेकिन फिर भी ९३ खाताधारकों का आधार प्रमाणीकरण लंबित है। शिकायतों के साथ १३१ और डीएलसी के माध्यम से ८३ खाते हैं। ४७ शिकायतों का निस्तारण तहसीलदारों द्वारा किया गया। तहसीलदार को आज १ शिकायत निवारण के लिए लंबित, अब तक १०८.२ लाख रुपये का कर्ज पहुँचा दिया गया है।

प्रमुख सचिव, सहकारिता एवं विपणन विभाग दिनांक १४ अक्टूबर, २०२१, १५ अक्टूबर से १५ नवम्बर २०२१ तक समीक्षा बैठक में दिये गये निर्देशानुसार लंबित आधार प्रमाणीकरण के साथ-साथ लंबित शिकायतों की अवधि इस मुद्दे को सुलझाने के लिए गोंदिया तहसील में एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। प्रमाणीकरण बैंक शाखा लंबित किसानों की ग्रामवार सूची कार्यालय में विकास सेवा संस्था के साथ-साथ संबंधित ग्राम पंचायत इसे ऑफिस स्पेस में प्रकाशित किया जाएगा। या विशेष अभियान के तहत और आधार प्रमाणीकरण के लिए आधार प्रमाणीकरण अनिवार्य है यह आखिरी मौका है। इस अवधि के भीतर आधार प्रमाणीकरण नहीं होने पर कर्ज राहत यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि योजना का लाभ नहीं मिलेगा। ऐसा है गोंदिया तहसील सहकारी समितियों के सहायक रजिस्ट्रार आरएस मथुलकर ने जानकारी दी।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल द्वारा बुलंद गोंदिया साप्ताहिक समाचार पत्र भवानी प्रिंटींग प्रेस, गुरुनानक वार्ड, गोंदिया, ता.जि.गोंदिया से मुद्रित व बुलंद गोंदिया भवन, जगन्नाथ मंदिर के पास गौशाला वार्ड, गोंदिया ४४१६०१, ता.जि.गोंदिया से प्रकाशित। संपादक : संपादक नवीन माणिकचंद अग्रवाल, मो.क्र. ९४०५२४४६६८। (पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिये जिम्मेदार) प्रकाशित किये गये समाचार व लेख से संपादक सहमत है ऐसा नहीं है। न्यायालय क्षेत्र गोंदिया।